RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

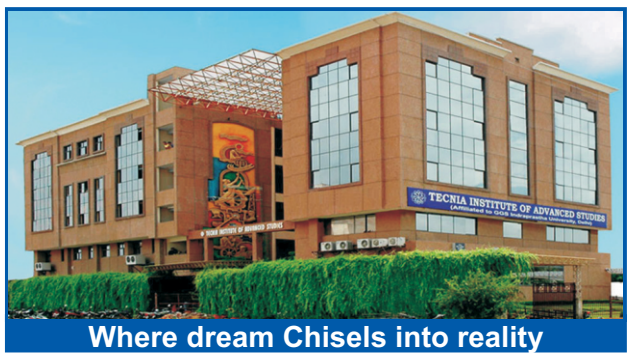

YOUNGSTER · ESTABLISHED 2004 · NEW DELHI · MAY 2021 · PAGES 4 · PRICE 1/- · MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

संक्रमण रोकने के लिए सीएसआईओ ने साझा की तकनीक

कोरोनो के संपर्क से बचाव इस वायरस के संक्रमण को रोकने का एक प्रभावी तरीका है। इसलिए, सबसे पहले उसके दायरे को चिह्नित कर उसके प्रसार पर अंकुश लगाना बहुत आवश्यक हो गया है। इस दिशा में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) की प्रयोगशाला केंद्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन (सीएसआईओ) का प्रयास रंग लाता दिख रहा है। इसके लिए आवश्यक तकनीक को विभिन्न अंशभागियों के साझ करने की मुहिम शुरू हो गई है।

ऐसे कई प्रमाण सामने आए हैं कि एयरोसोल के माध्यम से सार्स–सीओवी–2 संक्रमण तेजी से फैल रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो वातावरण में मौजूद सूक्ष्म कणों और बूंदों के माध्यम से हवा के जरिये संक्रमण के मामले बढ़ रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) से लेकर आरईएचवीए, एएसएचआरएई जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने इसकी पुष्टि की है। एयरबोर्न संक्रमण विशेषकर भीतरी स्थानों को बहुत जोखिम में डाल देता है। सीएसआईआर और उससे संबंधित प्रयोगशालाओं ने अपने अध्ययनों में पाया है कि यदि कोई संक्रमित व्यक्ति किसी कमरे में कुछ समय बिताता है, तो कमरे से उस व्यक्ति के जाने के दो घंटे बाद भी वायरस वहाँ मौजूद रह सकता है। इन प्रयोगों में सीएसआईआर से संबद्ध संस्थानों– सेंटर फॉर सेल्युलर ऐंड मॉलिक्युलर बायोलॉजी (सीसीएमबी) और इंस्टीट्यूट ऑफ माइक्रोबायल टेक्नोलॉजी (इम्टेक) की सहभागिता रही। उन्होंने गत वर्ष सितबंर में इस आशय से जुड़े प्रयोग किए थे।

हवा के माध्यम से फैलने वाले संक्रमण को रोकने के लिए एक ऐसा संक्रमण–रोधी उपकरण विकसित करने की चुनौती थी, जो वायु के तेज प्रवाह में भी कार्य करने में सक्षम हो। सीएसआईआर–सीएसआईओ ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए एक यूवी–सी एयर डक्ट डिसइन्फेक्शन सिस्टम ईजाद किया। इस डिसइन्फेक्शन सिस्टम का उपयोग सभागार, बड़े सम्मेलन–कक्षों, कक्षाओं और मॉल्स आदि में उपयोग किया जा सकता है। इस डिसइन्फेक्शन सिस्टम की मदद से महामारी के मौजूदा दौर में भीतरी स्थानों यानी इन्डोर जगहों को विसंक्रमित किया जा सकता है। विशेष रूप से सार्स सीओवी–2 वायरस पर अंकुश लगाने के लिए विकसित की गई इस तकनीक में सभी सुरक्षा पहलुओं के साथ वेंटिलेशन का भी खास ध्यान रखा गया है। इसे लेकर दावा किया गया है कि यह तकनीक 99 प्रतिशत वायरस, बैक्टीरिया, फंगस और अन्य बायो एयरोसोल से मुक्ति दिलाने में सक्षम है। कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर के दौरान विभिन्न प्रकार के फंगस वाले मामलों से निपटने में भी यह तकनीक मददगार साबित हो सकती है।

सीएसआईआर–सीएसआईओ ने इसे कई कसौटियों पर कसा है। इसे इमारतों की एयर हैंडलिंग यूनिट्स (एएचयू), परिवहन साधनों और अन्य घूमने वाले उपकरणों में इस्तेमाल किया जा सकता है। यह तकनीक ऊर्जा खपत के लिहाज से किफायती बतायी जा रही है। कोइल्स के जरिये यह हवा की गुणवत्ता सुधारने में प्रभावी है, और इसका रखरखाव भी आसान है। किसी भी मौजूदा एएचयू डक्ट्स के साथ इसे आसानी से फिट किया जा सकता है। इसकी शुरुआती लागत बहुत कम है।

सीएसआईआर–सीएसआईओ ने देशभर की करीब 27 कंपनियों के साथ यह तकनीक साझा की है। सीएसआईआर–सीएसआईओ के निदेशक प्रो. एस आनंद रामकृष्णा ने कहा कि इन कंपनियों के माध्यम से देश में व्यापक स्तर पर इस तकनीक की उपलब्धता बढ़ेगी। संस्थान में फैब्रियोनिक्स प्रभाग के प्रमुख डॉ. हैरी गर्ग और उनकी टीम ने इस तकनीक को विकसित करने में अहम भूमिका निभायी है। इस तकनीक से लोगों का भरोसा बहाल करने में मदद मिलेगी ताकि कार्यस्थलों और अपने संस्थानों में लौटकर वे खुद को सुरक्षित महसूस करें।

डॉली गर्ग बीएजेएमसी तृतीय वर्ष

गुरु अर्जुन देव जी महाराज ने धर्म की रक्षा हेतु स्वयं को कुर्बान कर दिया था

शहादत की महान परंपरा पंजाब के इतिहास की शान रही है। पंजाब की धरती बेशुमार कुर्बानियों व शहीदियों की प्रत्यक्ष गवाह बनी है। इस धरती पर धर्म व सत्य की नींव पक्की करने हेतु महापुरुष जंजीरों में जकड़े गए, दुखियों मजलूमों के अश्रु पोंछने के लिए आरों से चीरे गए, रंबियों से अपनी खोपडियाँ उतरवा दीं। संक्षिप्त में कहे तो पंजाब का इतिहास अपनी गोद में, ऐसी अनेकों बेमिसाल गाथाओं को समेटे बैठा है। शहीद, शहीदी, शहादत शब्द आम तौर पर जुबानी या कलामी तौर पर उपयोग किए जाते हैं। शहीद शब्द अरबी भाषा से लिया गया है। जिसका शाब्दिक अर्थ होता है 'चशमदीद गवाह' या 'गवाही'। कभी न डोलने वाले गवाही या गवाह को 'शाहद' कहते हैं। अरबी, ऊर्दू व फारसी में शहीद के बारे में कई मुहावरे मिलते हैं, जैसे शहादत तलबीदन, शहादत रसीदन, कलमा–ए–शहादत, शहादत गाह, शहादत हजूरी इत्यादि। अंग्रेजी भाषा का शब्द 'मार्टर' भी लैटिन एवं ग्रीक भाषा के 'मार्टरस' से निकला है, जिसका अर्थ होता है चशमदीद गवाह। भाव मैं अपनी गवाही, अपनी जान देकर खुद देता हूँ। 'सूरत–अल–फातिहा' के अनुसार शहीद वह बेगुनाह मानव या महापुरुष होता है, जो सत्य के रास्ते पर चलते हुए शहीद कर दिया जाता है। परंतु उल्लूओं का इकट्ठे होकर सूर्य का विरोध करने से उसे उदय होने से नहीं रोका जा सकता। हमारे विद्वजनों का भी कथन है कि शहीद की शहादत, कभी व्यर्थ नहीं जाती। अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन का कथन है–अगर आप जिंदा रहना चाहते हैं तो मरने की कला सीख, अगर तू अमन चाहता है तो लड़ाई के लिए तैयार हो जा, मृत्यु से जीवन व लड़ाई से ही अमन पैदा होता है। जब तक लड़ने वाला अपना सब कुछ कुर्बान करने को तैयार नहीं हो जाता, तब तक वो फतह हासिल नहीं कर सकता। सचमुच इन शहादतों ने हिंद के इतिहास में कभी न मिटने वाला असर छोड़ा है। अगर हम गहराई से चिंतन करेंगे, तो पाएँगे कि कुर्बानियों की इस रीति के सिरताज कोई और नहीं अपितु श्री गुरू अर्जुन देव जी महाराज थे। जिन्होंने धर्म की रक्षा हेतु स्वयं को कुर्बान कर दिया। उस समय के कट्टर मुगल बादशाह जहाँगीर की जालिम नीतियों ने श्री गुरू अर्जुन देव जी पर बेहद कहर बरपाया। बेशक दीवान चंदू व पृथी चंद का भी श्री गुरूदेव जी को शहीद करवाने में बड़ा हाथ था। परंतु ज्यादा दोष जहाँगीर का ही प्रकट होता है। क्योंकि संसार में गुरू घर की महिमा का प्रचार–प्रसार होता देख, जहाँगीर के अंदर ईर्ष्या की लपटें पैदा हो गईं थीं। जिनसे वो अंदर से बुरी तरह जल उठा। उसने अपने नापाक मनसूबे सिद्ध करने हेतु, एक महान व पवित्र आत्मा को शरेआम बेरहमी से शहीद किया। वो इस बात से अनभिज्ञ था, कि शहीद प्रत्येक कौम की अमूल्य धरोहर हुआ करते हैं। क्योंकि जब इस धरा की गोद में शहीदों का खून गिरता है तो कौमें और ज्यादा बलवान बनती हैं। और शहीद सदैव ही जिंदा रहते हैं। अज्ञानी व अहंकारी लोग सोचते हैं कि हमने उन्हें समाप्त कर दिया है। यद्यपि शहादत अत्याचार के विरुद्ध एक लड़ाई है, यह अमानवीयता के खिलाफ सहनशीलता की जीत है। शहीदी किसी मजबूरी का नाम नहीं अपितु यह तो किसी के सिदक व सबूरी की परीक्षा होती है। ईश्वर के प्रति उसकी दृढ़ता की कसौटी की परख होती है। श्री गुरू अर्जुन देव जी को 'यासा व सियासत' कानून के तहत लोहे की गर्म तवी पर बिठाकर शहीद किया गया। इस कानून के अनुसार शहीद का खून बहाए बिना उसे अमानवीय यातनाएँ व कष्ट देकर शहीद किया जाता है। अहंकारी जालिमों द्वारा श्री गुरूदेव जी को तवी पर बिठाकर उसके नीचे भीषण अग्नि जलाई गई। जब उनके पावन शीश मंडल पर उबलती रेत डाली गई, तो उनके नाक से खून बह निकला। यह देख जालिमों ने उन्हें उबलते पानी की देग में बिठा दिया गया।

जब सांई मियां मीर जी को इस दुखद घटना के बारे में पता चला तो वे गुरू जी के पास दौडे आए एवं कहने लगे कि मैं देख रहा हूँ कि धरती, आकाश व त्रिलोकी का नाथ तपती तवी पर बैठा है। सच्चे पातशाह मेरे पास जुल्म की यह इंहतिहा देखने की शक्ति नहीं है कि मेरा सर्व समर्थ पिता यह अमानवीय कष्ट सहन करे। आप मुझे एक बार आज्ञा दें, मैं दिल्ली व लाहौर की ईंट से ईंट बजा दूँगा। आप जैसी परम पवित्र आत्मा पर यह अत्याचार मैं नहीं सहार पाऊँगा। सच्चे पातशाह मेरा कलेजा फट रहा है, मेरा मन विद्रोही हो रहा है। गुरू जी ने सांई मियां मीर जी से कहा कि हे पुत्र! यह जलती हुई अग्नि मेरे हृदय को नहीं तपा सकती। प्रभु की रजा को मीठा कर मानने वाला हृदय बाह्य अग्नि से तप नहीं सकता। इनका कोई भी जुल्म परमात्मा की शक्ति से बड़ा नहीं हो सकता। और सांई जी फिर प्रेम का तो शर्त ही है–

जऊ तऊ प्रेम खेलण का चाऊ।
सिरु धरि तली गली मेरी आओ।।
इतु मारगि पैरु धरीजै।।
सिरु दीजै काणि न कीजै।।

सांई जी ने रोते हुए कहा–आप को यूं अमानवीय कष्ट देकर किस आदर्श की पूर्ति होती है? जिस दिव्य देह से आपने इस दीन–दुनिया का कल्याण करना है, उसकी इतनी बेअदबी क्यों? कृपया आप अपने सामर्थ्य से सृष्टि के नियमों को भंग कर दें। गुरूदेव! इन पापियों को सजा दें, या फिर हमें भी मृत्यु दे दो। हमसे आपकी यह हालत देखी नहीं जाएगी। हमें आप यह दृश्य दिखाकर आप कौन से कर्मों की सजा दे रहे हैं? गुरू जी ने सांई मियां मीर को समझाते हुए कहा–जिस प्रकार एक पौधे को कलम करने से ही वह बढ़ता फूलता है। इसी प्रकार से कुर्बानियों से ही कौमें बढ़ती फूलती हैं। पवित्र उद्देश्य के लिए की गई कुर्बानी कभी व्यर्थ नहीं जाती, यह अपना असर जरूर दिखाती है। एवं आप उस इंकलाब को अपनी आँखों से घटते अवश्य देखेंगे। शहादत अत्याचार के खिलाफ एक लड़ाई है, शहीदी किसी मजबूरी का नाम नहीं। अपितु इस समय इसकी महती आवश्यकता है। जब गुरू जी की दिव्य पावन देह आग से बुरी तरह झुलस गई तो उसे जालिम दरिंदों द्वारा रावी दरिया में स्नान हेतु भेजा गया। जहाँ पाँच दिनों तक गुरू जी पर, मानवता को शर्मसार करने वाले अमानवीय अत्याचार किए गए। छठे दिन गुरू जी का दिव्य शरीर रावी में ही अलोप हो गया। आगे चलकर श्री गुरू अर्जुन देव जी की इस शहीदी ने धर्म की नींव को पक्का कर दिया। वे इतने अमानवीय कष्ट सहकर भी तेरा कीया मीठा लागे पर दृढ रहे। वे सच्चे धर्म रक्षक, परोपकार इत्यादि दैविक गुणों से परिपूर्ण थे। आप जी महान लोक नायक हैं, आप जी द्वारा रचित वाणी दुख निवृति से लेकर आनंद प्राप्ति तक की यात्र करवाती है। आप जी का व्यक्तित्व एक ऐसा विशाल सागर है जिसका किनारा ढूंढना मुश्किल ही नहीं असंभव है। और भारत देश सदैव आप पर गर्व करता रहेगा।

चंदन कुमार, बीएजेएमसी तृतीय वर्ष

कोविड उपचार के लिए ल,न्च हुई डीआरडीओ की दवा '2-डीजी'

कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों के उपचार के लिए रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) की "2डीजी (टू–डीऑक्सी–डी–ग्लूकोज)" दवा की पहली खेप जारी कर दी गई है। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ हर्ष वर्धन और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा दवा की यह खेप जारी की गई है। इस दवा को डीआरडीओ ने डॉक्टर रेड्डीज लैबोरेटरीज के साथ मिलकर विकसित किया है।

इसे भी पढ़ेंरू कोविड और मलेरिया की दोहरी स्थिति में घातक हो सकता है स्टेरॉयड भारतीय औषधि महानियंत्रक (डीजीसीआई) ने हाल में इस दवा के आपात उपयोग की मंजूरी दी थी। कोविड–19 महामारी के खिलाफ लड़ाई में इस दवा को एक गेम–चेंजर के रूप में देखा जा रहा है, क्योंकि यह अस्पताल में भर्ती मरीजों को तेजी से रिकवर करने में मदद करती है, और उनके ऑक्सीजन सपोर्ट को भी कम करने में मदद करेगी। इस दवा को द्वितीयक औषधि की तरह उपयोग करने की अनुमति दी गई है। पाउडर के रूप में इस दवा को एक सैशे में दिया जाएगा, जिसे पानी में घोलकर सेवन करना होगा। संक्रमित कोशिकाओं पर जाकर यह दवा वायरस की वृद्धि को रोकने में प्रभावी पायी गई है।

"दवा के लॉन्च के अवसर पर केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉक्टर हर्ष वर्धन ने कोविड–रोधी दवा टू–डीऑक्सी–डी–ग्लूकोज विकसित करने के लिए डीआरडीओ तथा डॉक्टर रेड्डीज लैबोरेटरीज (डीआरएल) के वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना की है। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह दवा वैज्ञानिकों की एक साल की कड़ी मेहनत का नतीजा है। उन्होंने आगे बताया कि यह दवा कोरोना वायरस को बढ़ने से रोकने में काफी हद तक सक्षम है।

इसे भी पढ़ेंरू आकाशगंगा से गुजरने वाली कॉस्मिक किरणों के बारे में नया खुलासा

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भी इस दवा को बनाने वाली सभी संस्थाओं और वैज्ञानिकों को बधाई दी है। उन्होंने कहा है कि ष्डीआरडीओ एवं डीआरएल द्वारा तैयार की गई "2डीजी (टू–डीऑक्सी–डी–ग्लूकोज)" ड्रग कोविड के उपचार में प्रभावकारी सिद्ध होगी। यह हमारे देश के श्साइंटिफिक प्रोसेसश का एक बड़ा उदाहरण है। इसके लिए मैं डीआरडीओ और इस ड्रग की रिसर्च ऐंड डेवलपमेंट से जुड़ी सभी संस्थाओं को अपनी ओर से बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

डीसीजीआई ने मई 2020 में कोरोना संक्रमित मरीजों पर '2– डीजी' के दूसरे चरण के क्लिनिकल ट्रायल की अनुमति दी थी, और अक्तूबर 2020 तक मरीजों पर किए गए परीक्षणों में यह दवा सुरक्षित पायी गई है। इससे मरीजों की स्थिति में काफी सुधार देखा गया है। दूसरे चरण के क्लिनिकल ट्रायल में 110 रोगियों पर इस दवा का परीक्षण किया गया है। दूसरे चरण परिणामों के आधार पर डीसीजीआई ने नवंबर 2020 में तीसरे चरण के परीक्षण की अनुमति दी थी। यह परीक्षण दिसंबर 2020 से मार्च 2021 के बीच दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र आदि राज्यों के 27 कोविड अस्पतालों किया गया। वहीं, तीसरे चरण के परीक्षण में 220 मरीजों पर क्लीनिकल ट्रायल किया गया और '2–डीजी' के मामले में रोगियों के लक्षणों में काफी अधिक सुधार देखा गया है। स्टैंडर्ड ऑफ केयर (एसओसी) की तुलना में तीसरे दिन तक रोगी की ऑक्सीजन पर निर्भरता कम हो गई और यह पाया गया कि दवा सार्स–सीओवी–2 के खिलाफ प्रभावी रूप से काम करके उसकी वृद्धि को रोकने में प्रभावी है।

चंदन कुमार, बीएजेएमसी तृतीय वर्ष

THIS MONTH

May 21, 1991 - Former Indian Prime Minister Rajiv Gandhi was assassinated in the midst of a re-election campaign, killed by a bomb hidden in a bouquet of flowers. He had served as prime minister from 1984 to 1989, succeeding his mother, Indira Gandhi, who was assassinated in 1984.

*****

May 1, 2004 - Eight former Communist nations and two Mediterranean countries joined the European Union (EU) marking its largest-ever expansion. The new members included Poland, Hungary, the Czech Republic, Slovakia, Slovenia, Lithuania, Latvia, Estonia, along with the island of Malta and the Greek portion of the island of Cyprus. They joined 15 countries already in the EU, representing in all 450 million persons.

*****

May 2, 2011 - U.S. Special Operations Forces killed Osama bin Laden during a raid on his secret compound in Abbottabad, Pakistan. The raid marked the culmination of a decade-long manhunt for the elusive leader of the al-Qaeda terrorist organization based in the Middle East. Bin Laden had ordered the coordinated aerial attacks of September 11th, , in which four American passenger jets were hijacked then crashed, killing nearly 3,000 persons. Two jets had struck and subsequently collapsed the 110-story Twin Towers of the World Trade Center in York, while another struck the Pentagon building in Washington, D.C. A fourth jet also headed toward Washington had crashed into a field in Pennsylvania as passengers attempted to overpower the hijackers on board.

Compilation:
Aditi Shukla

BASICS OF MEDIA

Medium Requirements: All content elements, production elements, and people needed to generate the defined process message.

*****

Process Message: The message actually received by the viewer in the process of watching a television program.

*****

Teleprompter: A prompting device that projects the moving (usually computer-generated) copy over the lens so that the talent can read it without losing eye contact with the viewer. Also called auto cue.

*****

Production Schedule: The calendar that shows the reproduction, production, and postproduction dates and who is doing what, when, and where.

*****

Program Proposal: Written document that outlines the process message and the major aspects of a television presentation.

*****

Treatment: Brief narrative description of a television program.

*****

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Parul Arora

संपादक की कलम से

नकारात्मक खबरें फैलाने से कुछ नहीं होगा, जो कमियां हैं उसे दुरुस्त कर सकारात्मकता फैलाएं

कोरोना की दूसरी लहर के पीक के समाचारों के बीच यह सुखद खबर है कि देश में दो करोड़ से अधिक कोरोना संक्रमित देशवासी कोरोना को मात देने में सफल रहे हैं। अमेरिका के बाद दुनिया के देशों में यह सबसे अधिक है। संक्रमण दर में हम दूसरे नंबर पर चल रहे हैं तो मौत के मामलों में अमेरिका और ब्राजील के बाद तीसरे नंबर पर हैं। दो करोड़ से ज्यादा ने जंग जीती है तो करीब पौने तीन लाख ने दम भी तोड़ा है पर आज आवश्यकता मौत के आंकड़ों के स्थान पर ठीक होने वालों के समाचारों की है, ताकि सकारात्मक माहौल बन सके। क्योंकि कोरोना महामारी की भयावहता को हम नकार नहीं सकते। पर लोगों को दहशत में जीने से तो हम बचा सकते हैं। देश दुनिया में नंबरों का यह खेल किसी भी तरह से तुलनीय नहीं हो सकता क्योंकि दुनिया के किसी भी देश में कोरोना के कारण ही नहीं अपितु किसी भी कारण से एक भी व्यक्ति की मौत होती है तो वह अपने आप में गंभीर चिंतनीय है। हालांकि यह आंकड़े बेहद चिंतनीय होने के साथ ही कोरोना की दूसरी लहर की गंभीरता को चेता रहे हैं

हो क्या रहा है कि टीवी चौनलों पर व मीडिया के अन्य माध्यमों पर जिंदगी हारते लोगों की तस्वीरें, प्रशासन की नाकामियों को उजागर करते समाचार प्राथमिकता से दिखाए जा रहे हैं उससे मानवता का कोई भला नहीं होने वाला नहीं है। हद तो सोशल मीडिया खासतौर से वाट्सएप के तथाकथित ज्ञानियों ने कर दी है जो या तो दिन भर अज्ञान फैलाते रहते हैं या फिर नकारात्मक तस्वीरों से दहशत का माहौल बना रहे हैं। आज आवश्यकता कमियां निकालने या अभावों का दुखड़ा रोने की नहीं अपितु जो है उसे ही बेहतर करने की हो गई है। कहीं कोई कमी है तो उसे सही प्लेटफार्म पर उजागर करें और वह भी उसके निराकरण के सुझाव के साथ तो उससे इस महामारी की भयावह स्थिति से हम अधिक ताकत के साथ लड़ सकेंगे।

हालांकि मानवता के दुश्मनों ने अपनी करनी से कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। कोई अस्पतालों में बेड उपलब्ध कराने की बोली लगा रहा था तो कोई जीवन रक्षक दवाओं की कालाबाजारी में लिप्त हो रहा था। कोई आवश्यक उपकरणों यहां तक कि थर्मामीटर, ऑक्सीमीटर मनचाहे दामों में बेचने में लगे हैं तो कुछ दवाओं का स्टॉक जमा कर बाजार में कृत्रिम अभाव पैदा करने में लगे हैं। यहां तक कि हालात इस तरह के बना दिए गये कि लोगों में भय अधिक व्याप्त हो गया। आखिर देश में इस तरह के गिद्धों की जमात ने नोचने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। मानवता को शर्मसार करने में कोई कमी नहीं छोड़ी। मानवता के यह गिद्ध हमारे इर्द–गिर्द ही मंडरा रहे हैं। हमारा भी फर्ज हो जाता है कि इस तरह के मानवता के दुश्मनों को सार्वजनिक करें और प्रशासन को सहयोग कर ऐसे लोगों को सामने लाएं। ऐसे लोग व्यवस्था को बिगाड़ने और लोगों में दहशत पैदा करने में कामयाब हो जाते हैं और उसका खामियाजा समूचे समाज को भुगतना पड़ता है।

पिछले दिनों देश भर में जिस तरह से ऑक्सीजन की कमी कारण लोगों के मरने के समाचारों और बेड नहीं होने के समाचारों को प्रमुखता दी गई उससे देश भर में भय का माहौल बना। लोग घबराने लगे और इसी का परिणाम रहा कि देश भर में मारामारी वाले हालात बने और गिद्धों को नोचने का अवसर मिल गया। यह सही है कि प्रशासन की कमियों को उजागर किया जाए पर उसमें संयम बरतना आज की आवश्यकता ज्यादा हो जाती है। आज कमियां गिनाने का समय नहीं है। सरकार अपने स्तर पर प्रयास कर रही है। समझना होगा कि एक साल से भी अधिक समय से कारोबार बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। प्रवासी मजदूरों व असंगठित मजदूरों के सामने दो रोटी का संकट आ रहा है तो स्थाई रोजगार वालों के भी वेतन में कटौती हो रही है या छंटनी का डर सता रहा है। सरकार चाहे केन्द्र की हो या राज्यों की, संसाधनों की सीमाएं सब जानते हैं।

यह भी सही है कि पैनिक करने से समाधान भी नहीं हो सकता। ऐसे में यदि सरकार को अलग फोरम पर सुझाव और मीडिया में सकारात्मकता का संदेश दिया जाए तो इस संकट से देशवासी जल्दी ही उभरने की स्थिति में होंगे। अच्छा लगा जब यह जानकारी सामने आई कि देश में दो करोड़ से ज्यादा लोगों ने कोरोना के खिलाफ जंग जीती है। कोरोना संक्रमितों का आंकड़ा जो चार लाख को छूने लगा था वह अब करीब ढाई लाख पर आया है तो ठीक होने का आंकड़ा चार लाख प्रतिदिन को पार कर रहा है। रिकवरी रेट में लगातार सुधार हो रहा है। हालांकि देश में करीब 35 लाख संक्रमित लोग हैं और कोरोना की जंग जीतने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हिम्मत और सकारात्मक सोच व समाचारों से उन्हें रिकवर होने में अधिक आसानी होगी। इसलिए आज आवश्यकता संक्रमितों को बचाने के साथ ही लोगों में विश्वास पैदा करने की है। लोगों से यह डर निकालना होगा कि अस्पताल गए तो वहां देखने वाला कोई नहीं हैं, कभी भी ऑक्सीजन की कमी हो सकती है या दवाओं के लिए भटकना पड़ सकता है। गैर सरकारी संगठन यदि सहयोगी की भूमिका में आगे आते हैं तो हालातों को जल्दी ही सुधारा जा सकता है। मानवता के गिद्धों की गलत हरकतों को रोका जा सकता है। कोरोना के पहले दौर में जिस तरह से भयमुक्त वातावरण बनाकर लोगों को बचाया गया, वैसा ही प्रयास किया जाता है तो दूसर लहर से भी निपटना आसान हो जाएगा। यदि मीडिया सकारात्मक हालातों को प्रमुखता देगा तो मानवता के गिद्धों पर अंकुश लगेगा, लोगों में विश्वास जगेगा और दवा या अन्य की अनुपलब्धता के भय से मौतों को रोका जा सकेगा।

आरक्षण किसी का मौलिक अधिकार नहीं

श्रेय आर्या: आजादी के बाद संविधान निर्माताओं ने आरक्षण को लेकर यह शर्त रखी थी यह कानून 10 वर्षों तक लागू रहेगा और अगर आगे भी जरूरत पड़ी तो इसे बढ़ाने पर विचार किया जा सकता है। जनता को लाभ पहुंचाने के लिए लाया गया कानून अब जनता लॉलीपॉप की तरह पकड़ाया जा रहा है। हाल ही में नीट परीक्षाओं में आरक्षण को ल ` क र तमिलनाडु की राजनीतिक पार्टियों द्वारा एक याचिका डाली गई थी, जिसकी सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट ने दो टूक शब्दों में कहा कि **"आरक्षण किसी का मौलिक अधिकार नहीं है।"** कई राजनीतिक पार्टियों द्वारा सुप्रीम कोर्ट से मांग की गई थी कि जिस तरह तमिलनाडु सरकार 50 प्रतिशत् ओबीसी आरक्षण अपने राज्य में देती है ठीक उसी प्रकार पूरे देश में मेडिकल की सीटों पर 50 प्रतिशत् का ओबीसी आरक्षण मिलना चाहिए। आज आरक्षण को लेकर राजनीतिक पार्टियों की प्राथमिकताएं बदल गई हैं उन्होंने इसे राजनीतिक हथियार के तौर पर भुना लिया है। डीएमके, सीपीएम, सीपीआई और कांग्रेस आदि ये वो तमाम राजनीतिक दल हैं जो कभी भी किसी मुद्दे पर एकमत नहीं होते पर जब बात आरक्षण की आई तो सभी की रोटियां एक ही चूल्हे पर सिकने लगी। इन सभी ने मिलकर एक बार में आवाज लगाई कि इसे संविधान के अनुच्छेद 25 के तहत मूल

अधिकारों के हनन का मामला मानना चाहिए, लेकिन सुप्रीम कोर्ट के 3 जजों की बेंच ने इस याचिका को सुनने से ही इनकार कर दिया। सुप्रीम कोर्ट भी इन सभी कट्टर विरोधी पार्टियों को एक साथ देख कर हैरान था।

देश के हालात इस वक्त बहुत ही ज्यादा संवेदनशील बने हुए हैं एक ओर कोरोना महामारी का संकट है तो दूसरी ओर चीन सीमा पर बढ़ता तनाव, लेकिन ऐसे हालातों में भी सभी पार्टियों ने अपनी–अपनी तरफ से बड़े ही बेहतरीन ढंग से राजनीति को अंजाम दिया है। 70 साल से ज्यादा का वक्त हो चुका है लेकिन फिर भी देश में एक बहुत बड़ा तबका है, जो गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन कर रहा है उसे अभी तक इसका कोई भी लाभ नहीं मिल सका है। इस मुद्दे पर समर्थन और विरोध दोनों ही मामलों में राजनीतिक पार्टियों ने अपना फायदा देखा है, इस पर बात करते हुए अगर किसी ने सवाल उठा दिए तो उसे दलितों और पिछड़े वर्ग का दोषी करार दिया जाता है। बाबासाहेब अंबेडकर ने संविधान में जिस सुविधा का दायरा वक्त के साथ कम करने की बात कही थी आज उसने हर क्षेत्र में अपने पैर पसार लिए हैं। हमारे देश के राजनेता शुरू से ही आरक्षण के बीज बोकर मन मुताबिक फसल काटते आ रहे हैं। आरक्षण को जातिवाद की राजनीति में बदलकर देश और जनता दोनों को ही लूटा गया है। देश में आरक्षण जाति के आधार पर नहीं आमदनी के आधार पर देना चाहिए भारत के लगभग एक चौथाई जनसंख्या गरीब है और साक्षरता दर महज 75 प्रतिशत्।

ऐसे में जो समाज के पिछड़े और अनपढ़ तबके से आते हैं उन्हें इस आरक्षण की बहुत आवश्यकता है फिर चाहे वह किसी भी जाति–धर्म के हों। जरूरत है तो बाबा साहब के नाम का कॉपीराइट रखने वाली दलों को उनके मूल विचार समझने की।

New HPV vaccine is 'gender neutral': An oncoligist explains what this means.

Over the past few days, a gender-neutral HPV vaccine that has been released in the Indian market has become a talking point. This new vaccine named GARDASIL 9 is launched by MSD Pharmaceuticals and it is a 9 valent HPV vaccine. But with this, the question arises that isn't all vaccines gender-neutral? Were there any gender-specific vaccines to begin with? Vaccine per se is a very well-known disease prevention tool, thanks to the covid-19 pandemic. So far, any gender-specific vaccine is unheard of, at least by common people. But, this new HPV vaccine is expected to give protection to a larger bracket of the society against a variety of cancers and other ailments and largely cervical cancer, experts say. Dr Vijay Agarwal, Head Consultant-Medical Oncology, Aster CMI Hospital simplified the whole issue. "Human Papilloma Virus or HPV is a sexually transmitted disease that is said to be one of the major reasons for cervical cancer. Cervical cancer is the second most common cancer leading to 'death by cancers' in India. HPV vaccine is available under various brand names in India. But it is not included in the National Immunization Program whereas several western countries have it. "The commonest cause of cervical cancer are two variants of the HPV namely, Type 16 and Type 18. This is a sexually transmitted disease. Hence the vaccine is administered before a person becomes sexually active i.e., between 9 to 26 years of age. Cervical cancer is commonly seen in women who hail from low socio-economic families. The currently available vaccines are expensive making it worse. Until now, giving the HPV vaccine to men is not practised in India. One, because the target protection area is cervical cancer and hence women take natural priority over men. Two, because a larger population of women haven't got access to the vaccine yet. There is yet another reason that oncologists note: The most common cancers caused by HPV in men is oral cancer but the number of such cases is comparatively very low since tobacco is the leading cause of oral cancers in India.

Harsh, BAJMC 2nd Year

मौसम–कोरोना की मार और सरकारी बेरुखी से चौपट खेती–किसानी

इस बार पश्चिम उत्तरप्रदेश (यूपी) के बिजनौर जिले का किसान सुमित सिंह गेहूं घर लाया तो माथा पकड़कर बैठ गया। दाना कमजोर था और प्रति बीघा करीब आधा गेहूं ही निकल पाया। जबकि लागत हर साल की तरह लगाई। भले ही गेहूं की फसल घर आ गई, लेकिन बाजार में बेचने की हिम्मत प्रतापगढ़ के किसान विनोद सिंह के पास नहीं। नकदी का संकट है। व्यापारी एमएसपी से 200 रुपये कम का भाव लगा रहा है। आसपास कोई सरकारी केंद्र है नहीं। लॉकडाउन के कारण ग्राहक भी नदारद हैं। –किसान तेजपाल ने जैसे–तैसे पांच बीघा गेहूं की फसल तैयार की। कटाई भी की लेकिन मौसम की ऐसी मार पड़ी कि कटी–कटाई फसल खेत में ही रह गई। दाना तो कमजोर और काला होगा ही, खरीदार भी मिलना मुश्किल होगा।

–मध्य प्रदेश के आगर मालवा इलाके का किसान जगदीश पाटीदार प्याज की फसल से खुश था लेकिन लॉकडाउन की ऐसी मार पड़ी कि मुनाफा तो दूर खेत की लागत भी निकलना दूभर हो गई है। शहर में अभी भी 20 से 25 रुपये किलो फुटकर में बिकने वाला प्याज किसान को 4 से 6 रुपये प्रति किलो बेचने पर मजबूर होना पड़ रहा है।

इन चार उदाहरण के साथ किसानों की मनः स्थिति जानने के बाद कलेजा कांपने लगता है। मध्य प्रदेश में दो दिन तक लाइन में लगे किसान को जब दाना हलका और बेकार बता चलता करने की कोशिश की गई तो उसके मन पर क्या गुजरी होगी आप अंदाजा लगा सकते हैं। विरोधस्वरूप लाइन में लगे भूखे–प्यासे किसानों को लाठियां और खानी पड़ीं। छह माह दिन–रात एक कर फसल तैयार करने वाले किसान को सही भाव के लिए धक्के खाने पड़े। प्याज का किसान भी इस समय रो रहा है। सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी हैं। मौसम की बेरुखी के बाद कोरोना की मार ने किसानों को दोहरे संकट में डाल दिया है। ऊपर से सरकारी आंकड़ों की बाजीगिरी लगातार किसानों को भरमाने का काम करती है और यह सिलसिला बदस्तूर जारी है।

सरकार ने जानबूझकर बढ़ाए उत्पादन के आंकड़े

किसानों के साथ सरकारें और सरकारी तंत्र हमेशा से ही छल करते आए हैं। इस बार इसका खुलासा हुआ है। हालांकि इसके बाद भी किसान की स्थिति बदलेगी इसमें संदेह ही है। उत्तर प्रदेश सरकार के आंकड़े खुद गवाही दे रहे हैं कि इस वर्ष रबी की फसल के उत्पादन और उत्पादकता में आश्यर्चजनक तरीके से कमी आई है। इस बात का पता इसलिए चला कि खाद, बीज और कीटनाशक का बीते वर्ष की अपेक्षा इस बार रबी सीजन में कहीं अधिक इस्तेमाल किया गया लेकिन कटाई के वक्त उत्पादन से लेकर उत्पादकता में कमी दर्ज की गई। रबी की कटाई, मड़ाई एवं ओसाई की निगरानी कर रही एजेन्सियों की ओर से जो रिपोर्ट भेजी जा रही है, उससे यह पता चलता है कि पिछले साल से अधिक रकबा होने के बावजूद गेहूं से लेकर दलहन एवं तिलहन तक के उत्पादन एवं उत्पादकता में कमी आने जा रही है। उसके बावजूद खरीफ फसलों के उत्पादन लक्ष्य को सात से आठ प्रतिशत तक बढ़ाया गया है। लक्ष्य में यह बढ़ोतरी खरीफ की हर फसल मसलन धान से लेकर दलहन–तिलहन एवं मोटे अनाजों के उत्पादन तक के लिए की गई है।

आंकड़ों में संशोधन किया गया

प्रदेश सरकार के नुमाइंदों ने खरीफ प्लान के साथ भेजी खुद की रिपोर्ट में न सिर्फ इसे स्वीकार किया है बल्कि रबी के संभावित उत्पादन – उत्पादकता के आंकड़े को संशोधित कर घटाया भी है। साथ केंद्र को भेजी अपनी रिपोर्ट में कहा गया है कि यह भी संभव है कि फरवरी–मार्च में मौसम में जो बदलाव आया उससे पैदावार घटी है लेकिन परिणामों का विश्लेषण यह बताता है कि इसके पीछे कोई और बड़ा कारण हो सकता है, जो विस्तृत अनुसंधान के बाद ही पता लगे। हालांकि यह बात अगली खरीफ की फसल पर भी लागू होती है क्योंकि लॉकडाउन और खराब मौसम ने असली गणना पर भी सवालिया निशान खड़ा कर दिया है।

गणना का तरीका ही गलत

इस बारे में कृषि एवं लागत मूल्य आयोग (सीएसीपी) के पूर्व चेयरमैन डॉ. टी हक का मानना है कि अभी तक देश में किसानों की फसल खरीदने और उसका उचित मूल्य देने के लिए कोई ठोस नीति बनाई ही नहीं गई। कुछ नीतियां बनाई भी गईं उनका किसानों को कोई लाभ नहीं मिलता क्योंकि वह फाइलों में ही कैद हैं। टी हक का कहना है कि अगले सीजन के लिए एमएसपी निर्धारित करने के लिए पिछले सीजन के रकबे और उत्पादन के आधार पर गणना की जाती है जबकि यह आधार ही गलत है क्योंकि देश में अधिकांश खेती मौसम के उतार–चढ़ाव पर निर्भर करती है। उन्होंने माना कि सरकारी तंत्र खेती के डाटा को सरकार की मंशा के अनुरूप गढ़ लेते हैं जबकि वैज्ञानिक विधि से डाटा गलत होने की संभावना कम होती है लेकिन उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता। उन्होंने कहा कि न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) का फायदा केवल सात से नौ फीसदी किसानों को ही मिलता है लेकिन इससे ऐसा होता है कि बाजार में फसल का मूल्य लगभग स्थिर रहता है। अगर ऐसा न होता तो किसान फसल को कौड़ियों के दाम बेचने को मजबूर होते। उन्होंने बताया कि सरकार के पास फसल रखने की जगह ही नहीं। अगर किसानों को खेती को फायदे का सौदा बनाना है तो इसके लिए हर गांव में प्रोड्यूसर ग्रुप बनाने होंगे। को–ऑपरेटिव खेती को बढ़ावा देना होगा। इसके साथ ही केंद्र व राज्य सरकारों को निजी एजेंसी और इंटरनेशनल कंपनियों के साथ किसानों को जोड़ना होगा। उन्होंने उदाहरण के तौर पर बताया कि कोरिया जैसा छोटा सा देश वर्ष 1961 में आजाद हुआ। वहां की जोत भारत से कहीं कम है फिर भी तकनीक, मार्केटिंग और प्रोसेसिंग के चलते वहां का किसान तुलनात्मक रूप से 25 गुना ज्यादा खुशहाल है। इमानदारी से नीतियों के लागू होने पर ही किसान का भला होगा।

मौसम ने बिगाड़ा गेहूं उत्पादकता का गणित

इस बार दिसंबर और जनवरी में लगातार खराब मौसम ने गेहूं की उत्पादकता पर जबरदस्त असर डाला इसीलिए सरकारों को भी उत्पादन के बढ़े आंकड़ों को दुरुस्त करने को मजबूर होना पड़ा। मौसम विभाग (आईएमडी) के आंकड़े बताते हैं कि जनवरी में बारिश ने एक दशक का रिकॉर्ड तोड़ा। दिसंबर में भी सर्वाधिक आठ दिन कोल्ड वेव रही और बारिश ने रौद्र रूप दिखाया। आंकड़ों के मुताबिक भारत में जनवरी माह में सामान्य से 63 फीसदी अधिक बारिश रिकॉर्ड की गई। मध्य भारत इसमें सबसे आगे रहा यहां 84 फीसदी अधिक बारिश हुई। उत्तर पश्चिम भारत में 70 और पूर्वी–पूर्वोत्तर भारत में यह प्रतिशत 51 रहा।

इस संबंध में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पूसा के प्रधान कृषि वैज्ञानिक डॉ जेपी डबास कहते हैं कि बारिश आधारित इलाकों में तो रबी की फसल को इसका फायदा हुआ लेकिन पश्चिम यूपी या आसपास के इलाकों में इसका नुकसान भी उठाना पड़ा। लगातार बारिश से न तो खाद का अपेक्षित गुण लग पाया और न ही कीटनाशक का। नतीजतन ऐसे इलाकों में गेहूं की फसल कमजोर हुई। जिन इलाकों में तेज हवाएं चलीं और ओलावृष्टि हुई उसका भी नुकसान फसल और किसान दोनों को हुआ।

इस बारे में उत्तर प्रदेश किसान समृद्धि आयोग के सदस्य धर्मेंद्र मलिक भी इत्तेफाक रखते हैं। उनका मानना है कि खराब मौसम की वजह से गेहूं की नर्सरी में प्रस्फुटन नहीं हो पाया। परिणाम स्वरूप गेहूं की बाली कमजोर हुई और उसका उत्पादन पर जबरदस्त असर पड़ा है। उनका मानना है कि 40 से 45 कुंतल प्रति हेक्टेयर निकलने वाला गेहूं इस बार 25 से 30 कुंतल प्रति हेक्टेयर निकल रहा है। इसलिए आंकड़ों को एकत्र कर सरकार से गेहूं किसानों को अलग से प्रति कुंतल के हिसाब से आर्थिक मदद की मांग की जाएगी। बांझ होते खेत भी एक वजह हैं। बदलते मौसम के साथ ही खेती की उर्वरा शक्ति का कम होना भी उत्पादकता कम होने की एक वजह है। उत्तर प्रदेश की मृदा परीक्षण अभियान की रिपोर्ट में कहा गया कि खेतों को स्वस्थ रखने वाला जीवांश कार्बन मिट्टी से गायब हो चुका है। यह हालत एक–दो जिलों की नहीं बल्कि सभी 75 जिलों की है। जहां की मिट्टी में बमुश्किल से 0.25 प्रतिशत ही जीवांश कार्बन है जबकि मानक 0.8 होना चाहिए। इसका नतीजा ये निकल रहा है कि खेत में जो खाद और पानी लगाया जा रहा है वह व्यर्थ जा रहा है। कृषि जानकारों का कहना है कि यह कोई नई बात नहीं है। सरकार के पास तमाम जानकारियां उपलब्ध हैं लेकिन आज तक किसानों के लिए कोई योजना बड़े स्तर पर लागू ही नहीं की गई। जिलों में मृदा परीक्षण के बाद किसानों को जागरूक करने का काम करना चाहिए लेकिन ऐसी योजनाएं लालफीताशाही की भेंट चढ़ जाती हैं। यह हकीकत है कि उत्पादकता बढ़ानी है तो खेत की सेहत सुधारने का काम करना ही होगा।

हिमांशु सिंह, बीएजेएमसी तृतीय वर्ष

Vol. 14 **No.** 5
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Bal Krishna Mishra responsible for selection of News under PRB Act.
All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"I do not consider it an insult, but rather a compliment to be called an agnostic. I do not pretend to know where many ignorant men are sure -- that is all that agnosticism means."

- Clarence Darrow

*****

"Obstacles are those frightful things you see when you take your eyes off your goal."

- Henry Ford

*****

"I'll sleep when I'm dead."

- Warren Zevon

*****

"There are people in the world so hungry, that God cannot appear to them except in the form of bread."

- Mahatma Gandhi

*****

Compilation:
Priya Kumari

WINNERS v/s LOOSERS Part-90

Winners choose what they say;

Losers say what they choose.

*****

Winners truly believe;

Losers only hope.

*****

Winners are always part of the solution;

Losers are always part of the problem.

*****

Winners have a mission;

Losers have excuses.

***** आतिश कुमार

Winners maximize their strengths;

Losers dwell on their weaknesses.

*****

To Be Continued In Next Issue-

Compilation:
Anmol

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**